HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mediaeval Indian History)

Unit-II, (Life and Achievement of Humayun)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 33

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें ☐☐☐।

https://youtu.be/CnkJPxrJX7E

"हुमायूँ (1530-1556) की उपलब्धियां"

(ACHIEVEMENTS OF HUMAYUN)..

नासिरुदिन मुहम्मद हुमायूँ का जन्म बाबर की पत्नी माहम सुल्ताना के गर्भ से 6 मार्च 1508 को काबुल में हुआ। बाबर के 4 पुत्रों हुमायूँ, कामरान, असकरी, हिन्दाल में हुमायूँ सबसे बड़ा था, बाबर ने इसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। भारत में राज्याभिषेक के पूर्व 1520 में 12 वर्ष की अल्पायु में उसे बादख्शा का सुबेदार नियुक्त किया । बदख्शाँ के सुबेदार के रूप में हुमायूँ ने भारत के उन सभी अभियानों में भाग लिया जिनका नेतृत्व बाबर ने किया । 1529 में हुमायूँ बदख्शां की सुबेदारी त्याग कर आगरा आ गया, जहां पर बाबर की मृत्यु के बाद 30 दिसम्बर 1530 को 23 वर्ष की आयु आगर में हुमायूँ का राज्याभिषेक किया गया । बाबर द्वारा हुमायूँ को दिया गया यह निर्देश कि वह अपने छोटे भाइयों के साथ उदारता का व्यवहार करे, हुमायूँ ने कामरान को काबुल एवं पंजाब की सुबेदारी, असकरी को सम्भल की सूबेदारी एवं हिन्दाल को अलवर की सुबेदारी प्रदान की। साम्राज्य का इस तरह से किया गया विभाजन हुमायूँ की भयंकर भूलो में से एक था। जिसके कारण उसे अनेक आन्तरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कालान्तर में हुमायूँ के भाइयों ने उसका साथ नहीं दिया।

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

✓हुमायूँ का सैन्य अभियान

कालिंजर पर आक्रमण (1532) :– हुमायूँ को कालिंजर का अभियान गुजरात के शासक बहादुर शाह की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिये करना पड़ा। कालिंजर के किले पर आक्रमण के समय ही उसे यह सूचना मिली कि अफगान सरदार महमूद लोदी बिहार से जौनपुर की ओर बढ़ रहा है और उसे किले का घेरा उठाकर जौनपुर की ओर मुड़ना पड़ा।

✓दौहरिया(देवरा) का युद्ध (1532):–

जौनपुर की ओर अग्रसर हुमायूं की सेना एवं महमूद लोदी की सेना के बीच अगस्त 1532 में दौहरिया नामक स्थान पर संघर्ष हुआ जिसमें महमूद की पराजय हुई।

✓चुनार का घेरा (1532) :–

हुमायूं के चुनार के किले पर आक्रमण के समय यह किला अफगान नायक शेर खां के कब्जे में था। 4 महीने लगातार किले को घेरे रहने का बाद शेरखां एवं हुमायूँ में एक समझौता हो गया। समझौते के अन्तर्गत शेर खान ने हुमायूं की अधीनता स्वीकार करते हुए अपने पुत्र 'कुतुब को एक अफगान सैनिक टुकड़ी के साथ हुमायूं की सेवा में भेजना स्वीकार कर लिया, बदले में हुमायूं ने चुनार का किला शेरखां के अधिकार में छोड़ दिया। हुमायूँ का शेरखां को बिना पराजित किये छोड़ देना उसकी एक और भूल थी। इस सुनहरे मौके का फायदा उठा कर ने शेर खा ने अपनी शक्ति एवं संसाधनों में वृद्धि कर लिया। दूसरी तरफ हुमायूँ ने इस बीच अपने धन का अपव्यय किया।

1533 ई में हुमायूँ ने दिल्ली में 'दीनपनाह' नाम के एक विशाल दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसका उद्देश्य था मित्र एवं शत्रु को प्रभावित करना।

1534 में बिहार में मुहम्मद जमान मिर्जा एवं मुहम्मद सुल्तान मिर्जा के विद्रोह को हुमायूँ ने सफलता से दबा दिया।

✓बहादुर शाह से युद्ध (1535–36)–

गुजरात के शासक बहादुर शाह ने 1531 में मालवा तथा 1532 में 'रायसेन' के किले पर अधिकार कर लिया। 1534 ई में इसने चित्तौड़ पर आक्रमण कर संधि के लिए बाध्य किया। बहादुर शाह ने टर्की के कुशल तोपची की सहायता से एक बेहतर तोपखाने का निर्माण करवाया। दूसरी तरफ शेर खां ने 'सूरजगढ़ के युद्ध में बंगाल को हरा कर काफी सम्मान अर्जित कर लिया। उसकी बढ़ती हुई शक्ति हुमायूँ के लिए चिन्ता का विषय थी। पर हुमायूँ की पहली समस्या बहादुर शाह था । बहादुर शाह एवं हुमायूँ के मध्य 1535 ई में 'सारंगपुर' मे संघर्ष हुआ। बहादुर शाह पराजित होकर मांडू भाग गया। इस तरह हुमायूँ द्वारा मांडू एवं चम्पानेर पर विजय के बाद मालवा एवं गुजरात उसके अधिकार में आ गया। एक वर्ष बाद बहादुर शाह ने पुर्तगालियों के सहयोग से पुनः 1536 में गुजरात एवं मालवा पर अधिकार कर लिया, परन्तु फरवरी 1537 में बहादुरशाह की मृत्यु हो गई।

✓शेर खां से संघर्ष (अक्टूबर 1537 से जून 1540)–

1537 के अक्टूबर महीने में हुमायूँ ने पुनः चुनार के किले पर घेरा डाला। शेर खां के पुत्र कुतुब खां ने हुमायूं को करीब छः महीने तक किले पर अधिकार नहीं करने दिया । अन्ततः हुमायूं ने कूटनीति एवं तोपखाने के प्रयोग से किले पर कब्जा कर

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

लिया। इन छः महीनों का उपयोग शेरखां ने बंगाल अभियान में सफलता प्राप्त कर गौड़ के अधिकांश खजाने को रोहतास के किले में जमा कर लिया।

चुनार की सफलता के बाद हुमायूँ ने बंगाल पर विजय प्राप्त की। वह गौड़ में करीब 1539 तक रहा। १ 5 अगस्त 1538 को जब हुमायूँ ने बंगाल के गौड़ क्षेत्र में प्रवेश किया तो उसे वहां पर चारों ओर उजाड़ एवं लाशों का ढेर दिखाई पड़ा । हुमायूं ने इस स्थान का पुनर्निमाण कर इसका नाम 'जन्नताबाद रखा।

✓चौसा का युद्ध (26 जून 1539) –

26 जून 1539 को हुमायूं एवं शेर खान की सेनाओं के मध्य गंगा नदी के उत्तरी तट पर स्थित चौसा नामक स्थान पर संघर्ष हुआ। यह युद्ध हुमायूँ अपनी कुछ गलतियों के कारण हार गया। संघर्ष में मुगल सेना की काफी तबाही हुई । हुमायूँ ने युद्ध क्षेत्र से भागकर एक भिश्ती का सहारा लेकर किसी तरह गंगा नदी को पार कर अपनी जान बचाई।

चौसा के युद्ध में सफल होने के बाद शेर खान ने अपने को शेरशाह की उपाधि से सुसज्जित किया, साथ ही अपने नाम के खुतबे पढ़वाने एवं सिके ढालवाने का आदेश दिया।

✓बिलग्राम की लड़ाई (17 मई 1540)–

बिलग्राम व कत्रौज में लड़ी गई इस लड़ाई में हुमायूं के साथ उसके भाई हिन्दाल एवं असकरी भी थे, फिर भी पराजय ने हुमायूं का पीछा नहीं छोड़ा। इस युद्ध की सफलता के बाद शेर खान ने सरलता से आगरा एवं दिल्ली पर कब्जा कर लिया, इस तरह हिन्दुस्तान की राजसत्ता एक बार पुनः अफगानों के हाथ में आ गई।

इस तरह शेरशाह से परास्त होने के उपरान्त हुमायूँ सिंध चला गया, जहाँ से करीब 15 वर्ष तक घुमक्कड़ो जैसा निर्वासित जीवन व्यतीत किया। इस निर्वासन के समय ही हुमायूं ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु फारसवासी 'शिया मीर बाबा दोस्त' उर्फ 'मीर अली अकबर जामी की पुत्री हमीदा बेगम से 29 अगस्त 1541 को निकाह कर लिया, कालान्तर में हमीदा से ही अकबर जैसे महान सम्राट का जन्म हुआ।

✓हुमायूँ द्वारा पुनः राज्य की प्राप्ति–

1545 में हुमायूँ ने कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया। शेरशाह के पुत्र इस्लामशाह की मृत्यु बाद हुमायूं को हिन्दुस्तान पर अधिकार का पुनः अवसर मिला। 5 सितम्बर 1554 में हुमायूँ अपनी सेना के साथ 'पेशावर' पहुंचा, फरवरी 1555 में हुमायूं ने लाहौर पर कब्जा कर लिया।

✓मच्छीवार का युद्ध (15 मई 1555)–

लुधियाना में करीब 19 मील पूर्व में सतलुज नदी के किनारे स्थित मच्छीवार स्थान पर हुमायूं एवं अफगान सरदार 'नसीब खां' एवं 'तातारखां' के बीच संघर्ष हुआ। संघर्ष का परिणाम हुमायूं के पक्ष में रहा। सम्पूर्ण पंजाब मुगलों के अधिकार में आ गया।

✓सरहिंद का युद्ध (22 जून 1555)–

Dr. Gudav Kumar (A.N.D College)

इस संघर्ष में अफगान सेना का नेतृत्व 'सुल्तान सिकन्दर सूर' एवं मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खां' ने किया; अफगान पराजित हुए।

23 जुलाई 1555 के शुभ क्षणों में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । पर यह उसका दुर्भाग्य था कि वह अधिक दिनों तक सत्ताभोग नहीं कर सका । जनवरी 1556 में 'दीन पनाह' भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

हुमायूं के बारे में इतिहासकार 'लेनपूल' ने कहा कि 'हुमायूं गिरते पड़ते इस जीवन से मुक्त हो गया, ठीक उसी तरह जिस तरह तमाम– जिंदगी वह गिरते–पड़ते चलता रहा था।'

ज्योतिष में चूँकि हुमायूं विश्वास करता था, इसलिए इसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाये। वह मुख्यतः इतवार को पीला, शनिवार को काला एवं सोमवार को सफेद कपड़े पहनता था।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)